ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-12*January- 2022
Innovation The Research Concept

प्रयोगधर्मिता के नवीन आयाम- समकालीन कला के संदर्भ में

New Dimensions of Experimentalism - In the Context of Contemporary Art

Paper Id: 15616, Submission Date: 10/01/2022, Date of Acceptance: 20/01/2022, Date of Publication: 24/01/2022

नमिता सोनी
असिस्टेंट प्रोफेसर
(गेस्ट फैकल्टी),
पेंटिंग विभाग,
राजस्थान स्कूल ऑफ
आर्ट्स, जयपुर,
राजस्थान, भारत

सारांश

मानव एक ऐसा प्राणी है जिसे सुंदरता हमेशा ही आकर्षित करती रही है, मानव हमेशा से नवीनता के पक्ष में रहा है, तथा समय-समय पर वह अपनी भावनाओं में इच्छाओं को कला के माध्यम से अभिव्यक्त करता आया है। इस कार्य को करने के लिए उसे सदैव नए माध्यमों एवं तकनीकों की आवश्यकता पड़ती है, जिसके द्वारा वह अपनी अमूर्त भावनाओं को कला के माध्यम से आसानी से व्यक्त कर सकें,व पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके।

Man is a creature to whom beauty has always been attracted, man has always been in favor of novelty, and from time to time he has been expressing desires in his feelings through art. To do this work, he always needs new mediums and techniques, by which he can easily express his abstract feelings through art, and can achieve complete success.

मुख्य शब्दः प्रयोग धर्मिता, अमूर्त, ललित कला, अधिष्ठापन कला (इंस्टालेशन आर्ट), मनोवैज्ञानिक, त्रिआयामी, काइनेटिक आर्ट, ग्लेजिंग, डिजिटल, फोटोग्राफी.

Keywords: Application Religiousness, Abstract, Fine Art, Installation Art, Psychological, Three Dimensional, Kinetic Art, Glazing, Digital, Photography.

प्रस्तावना

प्राचीन काल में अगर हम देखें तो हम पाते हैं कि आदि मानव ने प्रयोग धर्मिता का उपयोग करके अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भाषा का निर्माण किया तथा भाषा को माध्यम बनाकर अपने अमूर्त विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान की इस प्रकार काव्य, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, एवं चित्रकला आदि कलाओं का भी सूत्रपात हुआ।

मानव ने इन माध्यमों के द्वारा अपनी क्षुधा को शांत किया तथा अपनी कलात्मक एवं सृजनात्मकता को नए आयाम प्रदान किए। यह सभी कलाएं मानव की भावनाओं एवं अभिव्यक्ति को व्यक्त करने की माध्यम बनकर हमारे बीच मानव के आरंभ काल से निरंतर चली आ रही है तथा समय-समय पर अपने आप को परिवर्तित भी करती रही है, जिससे कि यह सभी कलाएं समय काल में विलुप्त होकर ना रह जाए।

मानव आरंभ से ही अपनी भावनाओं को भाषा, नृत्य, चित्रकला आदि अनेक माध्यमों के द्वारा व्यक्त करता आया है तथा काफी हद तक उसमें सफलता भी हासिल करें। एक संगीतकार विभिन्न स्वर व तान के माध्यम से अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति का परिचय देता है तथा नवीनता का सृजन करता है, इसी प्रकार एक नृत्यांगना अपनी विभिन्न मुद्राओं के द्वारा, मूर्तिकार व शिल्पी अपने नवीन आकार तथा नवीन रूपों के द्वारा, एक चित्रकार विभिन्न रूपों के आकारों के साथ-साथ माध्यमों एवं तकनीकों का सहारा लेकर अपनी कलात्मक रचनात्मकता का परिचय देता है तथा समय-समय पर इन माध्यमों एवं तकनीकों में नवीनता का समावेश करके हमें नवीन रूपों एवं आकारों से अवगत कराता है।

प्राचीन काल के मानव ने अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए दीवारों, बर्तन-भांडो व मुद्राओं पर चित्रकारी प्रारंभ की,कलाकार अपनी भावनाओं को प्रमुख रूप से कला के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करते थे। इन चित्रों को बनाने के लिए विभिन्न रंगों जैसे गेरू, चूना, आदि प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करते, परंतु समय के साथ-साथ उनके माध्यमों एवं तकनीकों में परिवर्तन होता गया तथा पुराने माध्यमों में ही प्रयोग एवं सुधार करते हुए कुछ नयापन लाने के लिए नवीन माध्यम का आविष्कार किया।

अजंता, एलोरा, जोगीमारा, बाघ आदि के गुफा चित्रों को देखकर इसका अंदाजा लगाया जा सकता है कि उस समय कलाकार चित्र निर्माण करने से पूर्व ही भित्ति का निर्माण बड़ी सहजता के साथ करता था। धीरे-धीरे समय के साथ इस में काफी परिवर्तन आया। भारत में आधुनिकता का समावेश होने पर चित्रकला में साठ के दशक में कुछ नए आयाम व माध्यम कला जगत में प्रचलित हुए, यहीं से आधुनिक कलाकार अभिव्यक्ति में माध्यम एवं तकनीक को प्रमुखता देकर नवीन प्रयोग करने लगे।[1]

इन माध्यमों एवं तकनीकों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। पाश्चात्य आधुनिक कला ने भारतीय कला जगत में परिवर्तन की काफी महत्वपूर्ण एवं क्रांतिकारी भूमिका निभाई। पाश्चात्यआधुनिक कला के क्षेत्र में नए आयामों नए माध्यमों एवं तकनीक विधियों पर जोर देना शुरू से ही आरंभ हो गया था। पाश्चात्य आधुनिक कला में यथार्थवाद को पीछे छोड़कर ज्यों ही कला आगे बढ़ना आरंभ करती है तकनीक में भी परिवर्तन आरंभ हो जाता है। इंप्रेशनिस्ट कलाकारों ने इंद्रधनुषी रंगों को ही चित्र के लिए उपयुक्त समझा और झिलमिलाते प्रकाश को चित्रित करने के लिए रंगों के छोटे-छोटे कतरो, धब्बों, तूलिका चापो का प्रयोग किया।[2]

समय के साथ साथ कलाकारों ने नवीनता के लिए अपनी सृजनात्मक शक्ति के बल पर कुछ नया करना चाहा तथा उसमें सफलता भी हासिल की। समय के साथ तकनीक भी बदलती गई तथा माध्यम में भी बदलाव आया। भारत में तेल रंग पद्धति में कार्य करने वाले सर्वप्रथम चित्रकार राजा रवि वर्मा थे, उन्होंने भारतीय पौराणिक विषयों को तेल रंग माध्यम में बनाया। नंदलाल बोस को भारतीय आधुनिक कला में उच्च स्थान प्राप्त है, उन्होंने प्राचीन शास्त्रीय कलाकृतियों का अनुसरण किया तथा मनोवैज्ञानिक परिपेक्ष अपनाया। यूरोपियन कला शैलियों से छाया प्रकाश की तकनीक को एवं चीन व जापान की कला शैलियों से रंग विधान को अपनाकर अपने कार्य में नवीन प्रयोग किए। नंदलाल बसु की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने इन सभी प्रभावों में प्रणव को अपनी अद्भुत क्षमता से एक ऐसा रूप प्रदान किया जो निजी और मौलिक हो उठा, जिसमें एक ताजगी वह नूतनता भी थी।[3]

इसके पश्चात अगला नाम इसी चरण में यामिनी राय का आता है। इन्होंने लोक कला से प्रभावित होकर तथा प्रेरित होकर कलाकृतियों का सृजन किया तथा भारतीय चित्रकला में नवीन आयामों का समावेश किया। उनमें कुछ नवीन करने की ललक हमेशा रहती थी। उन्होंने लहरदार रेखाएं तथा वर्तुलाकर रेखाओं का समावेश अपनी कलाकृतियों में किया तथा भारतीय कला जगत को नवीन तकनीक से अवगत कराया।

भावेश सान्याल, रामकुमार, सतीश गुजराल, विवान सुंदरम, अनीश कपूर, भारती खेर आदि कुछ ऐसे ही कलाकार हैं, जिन्होंने अपनी कुशलता के बल पर नवीन तकनीकों माध्यमों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया। आज कलाकार इतना स्वतंत्र हो गया है कि वह किसी भी तरह के माध्यम के प्रयोग करने में हिचकता नहीं है, किसी भी तरह का प्रयोग करने में कलाकार को हिचकिचाहट महसूस नहीं होती। वह नवीन प्रयोग करने में एक आनंद की प्राप्ति करता है। आधुनिक कला जगत में माध्यमों तथा रचना सामग्री में विविधता देखी जा सकती है।टेंपरा, तेल रंग, जल रंग, क्रेयॉन्स, मिक्स मीडिया, एक्रेलिक, कोलाज, इंपेस्टो, इंस्टॉलेशन आदि में काफी कार्य किया जा रहा है। यह माध्यम उनकी रचनात्मक क्षुधा को शांत करने में काफी सहायक रहे हैं। कलाकार किसी एक माध्यम या तकनीक में कार्य करने के लिए बाध्य नहीं है। उनके पास एक से बढ़कर एक माध्यम है, जिसके द्वारा वह अपने मनोभावों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

कलाकार मिट्टी, प्लास्टर, लुगदी, व मोम तथा अनुपयोगी सामानों का प्रयोग कर आकृतियों को त्रिआयामी प्रभाव देकर कलाकृतियों में सजीवता प्रदान करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य को अंजाम दे रहा है। कलाकार चित्र एवं मूर्तिकला से निकलकर अब नवीन साधनों का प्रयोग कर इंस्टॉलेशन (अधिष्ठापन कला) व काइनेटिक आर्ट में भी सहज भाव से अपनी अभिव्यक्ति कर रहे हैं। कलाकार अपने मन में आए विचारों को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए विचारों के अनुसार माध्यम व तकनीक ढूंढ ही लेता है।

वह धातु को पीट-पीटकर रिलीफ का प्रभाव उत्पन्न करने में सफल हुआ है। यह चित्र रिलीफ के समान लगते हैं तथा भावानुकूल प्रभाव को उत्पन्न करने में सफल हुए हैं। उदाहरणतः जयराम पटेल लैमिनेटेड लकड़ी को स्थान-स्थान पर ब्लो टॉर्च जलाकर चित्र बनाते हैं, वही सतीश गुजराल ने कास्ट की पतली लंबी पट्टियों को जोड़कर चित्र चल बनाकर उसे जलाकर विशेष प्रकार के प्रभाव उत्पन्न करने की एक अन्य विधि भी विकसित की है।[4] इस प्रकार के चित्रों को सुरक्षित करने के वे रासायनिक घोल का प्रयोग करते हैं तथा उसके बाद उसमें अलंकरण के लिएस्वर्ण पत्रों का प्रयोग करते हैं।

कलाकार कैनवास पर विभिन्न वस्तुओं को चिपका कर अलग प्रभाव उत्पन्न करने में सफल हुए। विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करके इंस्टॉलेशन (ऑडियो, वीडियो,आदि), काइनेटिक आर्ट में भी सहजता के साथ सफल हुए। कलाकार स्वयं की अभिव्यक्ति वह क्षुधा शांति के लिए ऐसा करते हैं, उन्हें दर्शक की पसंद नापसंद से कोई फर्क नहीं पड़ता। आज आधुनिक कला जगत में कलाकार स्वयं की तकनीक व माध्यम को अपनाए हुए हैं, उनकी वह विशिष्ट तकनीक उनकी पहचान बन चुकी है। कुछ कलाकार तेल रंगों को जल रंगों की तरह प्रयोग करते हैं तथा उनका प्रभाव जरंग जैसा ही लगता है, वहीं कुछ कलाकार कैनवस पर ही रंग की मोटी परत लगा देते हैं, इन चित्रों का प्रभाव सामान्य चित्रों की अपेक्षा अलग ही होता है। कुछ कलाकार सीधे कैनवस पर रंग लगाते हैं, कुछ चित्रों को अलंकृत करने के लिए स्वर्ण पत्र का प्रयोग करते हैं। हुसैन साहब विभिन्न मोतियों तथा माणिक्य आदि को चारों ओर किसी विशेष कलात्मक आकार में अलंकृत करते रहे हैं।[5]

प्राचीन काल में कला के सीमित साधन थे, जिनके कारण कलाकृतियों पर वातावरणीय प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। समय, काल एवं परिस्थितियों के कारण कलाकृतियां काफी हद तक धुंधले पड़ गए, परंतु आज कलाकार के पास माध्यम व तकनीकों की कोई कमी नहीं है। मानव के विकास के साथ-साथ लगातार कला में भी नवीन प्रविधियां की खोज हुई है, जिसके कारण आज कलाकार द्वारा बनाए गए चित्रों में धुंधलापन जैसी समस्या के लिए कोई ना कोई समाधान अवश्य ही मिल जाते हैं। आज के कलाकारों के पास कलाकृतियों को सहेज कर रखने के लिए एक से बढ़कर एक माध्यम व तकनीक है।

टेंपरा जो एक अत्यंत प्राचीन तकनीक है, तेल रंग के तकनीक से पूर्व इसका प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता था, परंतु समय के साथ इसका प्रयोग ना के बराबर हो गया। टेंपरा तकनीक में पहले कलाकार रंग में माध्यम के तौर पर अंडा या अंडे की जर्दी का प्रयोग करते थे जिससे रंग पक्के वह सुरक्षित हो जाएं, परंतु आज अनेकों माध्यम व अनेकों तरह के रंग आज आने के पश्चात इस तकनीक का प्रयोग बहुत ही कम या कहें कि ना के बराबर होने लगा है।

जल रंग तकनीक एक ऐसी तकनीक है जिसका प्रयोग पहले भी होता था, आज भी होता है और भविष्य में भी होता रहेगा। आज जल रंग भी अनेकों तरह के मिलने लगे हैं। इसी माध्यम का कुशलता से उपयोग करके बंगाल स्कूल के कलाकारों ने वॉश तकनीक को प्रयोगधर्मिता के साथ अपनाया।

आज गलेजिग एक नवीन तकनीक है, कलाकार चित्र में पारदर्शी प्रभाव उत्पन्न करने के लिए इस तकनीक का प्रयोग करता रहा है। इसमें रंग की प्रथम परत सूखने पर कलाकार पतले रंग की दूसरी परत इसके ऊपर लगाता है जिससे चित्र में पारदर्शी प्रभाव उत्पन्न हो जाता है।

आज का कलाकार अपनी व्यक्तिगत तकनीक व माध्यम से कार्य करने में लगातार निरंतर पूर्ण श्रद्धा व लगन के साथ लगा हुआ है। इसी संदर्भ में जोगेंद्र चौधरी के जाल से बने नसरगीकरूप, गुजराल के कोलाज, तथा रिलीफ रूपाकार, बद्रीनारायण की पच्चीकारी, विकास भट्टाचार्य के वास्तुशिल्पीय अभिप्राय, अनीश कपूरव हेमा उपाध्याय के इंस्टॉलेशन आदि किसी को भी प्रयोग की दृष्टि से नकारा नहीं जा सकता। कला एवं कलाकारों की समीक्षा करने वाले दार्शनिकों का मानना है कि कलाकार को हर समय नए नए प्रयोग पर अपनी दृष्टि रखनी चाहिए।[6]

कंप्यूटर का कला जगत में पदार्पण, संचार माध्यमों का विकास, डिजिटल फोटोग्राफी आदि दृश्य कलाओं में प्रयोग धर्मिता के क्षेत्र में कलाकारों को नई नई चुनौतियां दे रहे हैं।[7]

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह था कि आज के समकालीन समय में कलाकार किस किस नवीन तकनीक एवम प्रयोग के माध्यम से अपने कार्यों को मूर्त रुप प्रदान कर रहे है। प्राचीन काल में बनने वाली कला एवम समकालीन कला में नवीन तकनीक एवम प्रयोग धर्मीता का कितना योगदान रहा है।

निष्कर्ष

इन प्रयोग धर्मिता के नवीन आयामों ने कलाकारों को ऐसा आधार प्रदान किया है जिसके द्वारा वह अकथनीय व अकल्पनीय दृश्य को इन माध्यमों एवं तकनीकों के सहायता से दृश्य रूप प्रदान करने में सफल हो सका है। इन प्रयोग धर्मिता के नवीन आयामों का कलाकार के मनोभावों की अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण स्थान है, नवीन साधन कलाकारों की अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान करने में सार्थक सिद्ध हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्रदीप, डॉक्टर किरण - कलागत तत्व, कृष्णा प्रकाशन, मीडिया प्रा. लि.पृष्ठ 1.24*
2. *शुक्ला, रामचंद्र - आधुनिक कला समीक्षावाद, कला प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1994 पृष्ठ 115*
3. *सक्सेना, डॉ. एस. बी. एल. लखटकिया, डॉ. आनंद - भारतीय चित्रकला परंपरा और आधुनिकता का अंतर्द्वंद, सरन प्रकाशन, नेहरू पार्क, बरेली, पृष्ठ 110*
4. *अग्रवाल, जी. के. - आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन, आगरा-3, तृतीय संस्करण, 2002, पृष्ठ 217*
5. *वही, पृष्ठ 217*
6. *समकालीन कला - नवंबर 1987, मई 1988, अंक 9-10, पृष्ठ 25*
7. *प्रदीप, डॉक्टर किरण - कलागत तत्व, कृष्णा प्रकाशन, मीडिया प्रा. लि. पृष्ठ 1.32*